

संयुक्त राष्ट्र संघ और वर्तमान विश्व

Sayukt Rashtra Sangh Aur Vartman Vishv

अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में द्वितीय विश्व युद्ध का सबसे बड़ा योगदान संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना के रूप में सामने आया। 24 अक्टूबर 1945 ई. को स्थापित इस विश्व संस्था का मुख्यालय उत्तरी अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर में है। इस संस्था के गठन में अमेरिका, रूस, इंग्लैंड, फ्रांस, चीन आदि देशों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। तब से लेकर अब तक इस संस्था के सदस्य देशों की संख्या निरंतर बढ़ रही है और दुनिया के प्रायः सभी देश आज इसके सदस्य हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ के अंगों में महासभा, सुरक्षा परिषद, आर्थिक एवं सामाजिक परिषद, न्यास परिषद, अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय तथा सचिवालय का नाम प्रमुख है। इसकी कार्यपालिका को सुरक्षा परिषद के नाम से जाना जाता है जिसके पांच स्थाई सदस्य अमेरिका, रूस ब्रिटेन, फ्रांस और चीन हैं। यह संयुक्त राष्ट्र का सबसे शक्तिशाली अंग है तथा पांचों स्थाई सदस्यों को किसी भी मामले में वीटो का अधिकार प्राप्त है।

संयुक्त राष्ट्र की स्थापना के समय इसके सदस्यों की संख्या मात्र 50 थी जो आज बढ़कर लगभग 200 तक पहुंच गई है। यह तथ्य इस संस्था की बढ़ती लोकप्रियता का प्रमाण कहा जा सकता है। परंतु इस संस्था की स्थापना से लेकर अब तक दुनिया में लगभग 50 युद्ध हो चुके हैं जो इसकी विफलता की कहानी को बयान करता है। संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना का मुख्य उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा एवं शांति बनाए रखना है लेकिन आंकड़े कहते हैं कि विश्व के शक्तिशाली देशों ने संयुक्त राष्ट्र के मूल सिद्धांतों की धज्जियां उड़ाने में कोई कसर न छोड़ी। हमारा देश आरंभ से ही इस विश्व संस्था का सदस्य रहा है परंतु आजादी के बाद हमने तीन बड़े युद्ध झेले हैं। जब चीन ने भारत पर आक्रमण किया तो संयुक्त राष्ट्र कुछ न कर सका सिवाय अपील करने के।

संयुक्त राष्ट्र की स्थापना के समय से दुनिया पर शीत युद्ध की छाया पड़ने लगी। दुनिया के देश सोवियत संघ और संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के अघोषित झंडे तले लामबंद होने लगे। कई बार तो ऐसा लगा कि तीसरा प्रलयकारी विश्व युद्ध होने ही वाला है परंतु परमाणु अस्त्रों की उपलब्धता ने मानव समुदाय को ऐसा करने से रोके रखा। सोवियत संघ के

विघटन के पश्चात इसके मुख्य घटक रूस की अर्थव्यवस्था चरमराने लगी औश्च इस तरह शीत युद्ध का खतरा टला। आज की दुनिया एकधुरवीय हो गई है जिसका नेतृत्व अमेरिका के हाथों में है। संयुक्त राष्ट्र संघ अमेरिका के हाथों में एक कठपुतली की भांति है, इसका प्रकटीकरण इराक पर अमेरिकी हमले के समय हो गया। ब्रिटेन, स्पेन, इटली, जापान आदि देशों को छोड़कर दुनिया के प्रायः सभी देश इराक पर नाहक हमले के पक्ष में नहीं थे परंतु अमरीका ने संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव के बिना ही आतंकवाद की समाप्ति के नाम पर इराक पर हमला कर दिया।

ऐसे एक नहीं कई उदाहरण मिल जाएंगे कि प्रभुत्व संपन्न राष्ट्रों ने अपने निजी स्वार्थों की पूर्ति हेतु संयुक्त राष्ट्र के सामूहिक उद्देश्यों को दरकिनार कर दिया और मनमाना आचरण किया। यही कारण है कि जब इजरायल के विरुद्ध सुरक्षा परिषद में कोई प्रस्ताव लाया जाता है तो अमरीका उस पर वीटो कर देता है। वर्तमान विश्व के लिए आतंकवाद सबसे बड़ा खतरा बन रहा है, परंतु संयुक्त राष्ट्र संघ इस दिशा में कुछ भी कर पाने में असमर्थ दिखाई दे रहा है। विभिन्न राष्ट्र आतंकवाद से लड़ाई लड़ने के मामले में दोहरे मापदंड अपना रहे ह। 11 सितंबर सन 2001 के दिन अमरीका पर जघन्य आतंकवादी हमले हुए तो अमरीका सहित दुनिया के देशों की नींद खुली। भारत में आतंकवाद बहुत पहले से अपना कहर ढा रहा है जो मुख्यतः पाकिस्तान के समर्थन का नतीजा है। लेकिन ब्रिटेन, अमरीका आदि देश भारत में फैले आतंकवाद को क्षेत्रीय समस्या मानकर भारत और पाकिस्तान दोनों की पीठ थपथपा रहा है जो इनकी तुष्टीकरण की नीति का बयान करता है।

इन जटिलताओं के बावजूद संयुक्त राष्ट्र की उपयोगिता है क्योंकि सामाजिक क्षेत्रों में इसने उल्लेखनीय कार्य किया है। राजनैतिक हलकों में संयुक्त राष्ट्र संघ की राय उपयोगी मानी जाती है जो एक मापदंड का कार्य करती है। कई देशों की आंतरिक अशांति अथवा घरेलू विप्लव की स्थिति में संयुक्त राष्ट्र की शांति सेना ने उत्तम कार्य किया है। इसने विभिन्न राष्ट्रों की सेना की मदद से शांति और सुरक्षा के लिए कार्य किए हैं। दूसरी ओर संसार भर के सांस्कृतिक धरोहरों की पहचानकर उनके रखरखाव में अच्छा-खासा योगदान दिया है। कई देशों में कुपोषण से पीड़ित बच्चों की भी इस विश्व संस्थान ने मदद की है। संयुक्त राष्ट्र दुनिया के गरीब देशों में शिक्षा एवं स्वास्थ्य से संबंधित विशेष अभियान चलाकर एक तरह से सामाजिक समानता और उत्थान का कार्य करता है। सबके लिए स्वास्थ्य संयुक्त

राष्ट्र का लक्ष्य है। संयुक्त राष्ट्र ने भारत जैसे देशों में बाल श्रम विरोधी अभियान चलाए हैं क्योंकि यह संस्था दुनिया के सभी बच्चों के कल्याण के प्रति समर्पित है। ये सभी कार्य संयुक्त राष्ट्र संघ अपनी विभिन्न एजेंसियों की मदद से करता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कई खामियों के होते हुए भी वर्तमान विश्व के समक्ष संयुक्त राष्ट्र का कोई विकल्प नहीं है। यह संस्था अपने सदस्य देशों के आर्थिक एवं अनू तरह के सहयोग से ही चलती है। अतः सदस्य देश जब तक इसे और सुदृढ़ न बनाएं तब तक यह पंगु ही रहेगी। इसके ढांचे में सुधार की मांग भारत सहित दुनिया के कई देश लंबे अरसे से कर रहे हैं लेकिन अब तक इस ओर ध्यान नहीं दिया गया है। सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्यों की संख्या में बढ़ौत्तरी अब अपरिहार्य हो गई है क्योंकि दुनिया पिछले 60 वर्षों में काफी बदल गई है। संयुक्त राष्ट्र संघ को जितना प्रभावी बनाया जाएगा, उतना ही विश्व स्वयं को सुरक्षित महसूस करेगा, इसमें कोई संदेह नहीं है।